www.thearyasamaj.org

ओ३म्

वर्ष : 28 अंक : 10, 25 अक्टूबर, 2013 दयानन्दाब्द 190 सृष्टि संवत् 1,97,29,49,114

आर्य वीर विजय

अमर शहीद पं. लेखराम स्मृति मासिक पत्रिका

हरियाणा-दिल्ली-पंजाब-उत्तर प्रदेश-उत्तरांचल-राजस्थान-मध्यप्रदेश-गुजरात-महाराष्ट्र-हिमाचल प्रदेश

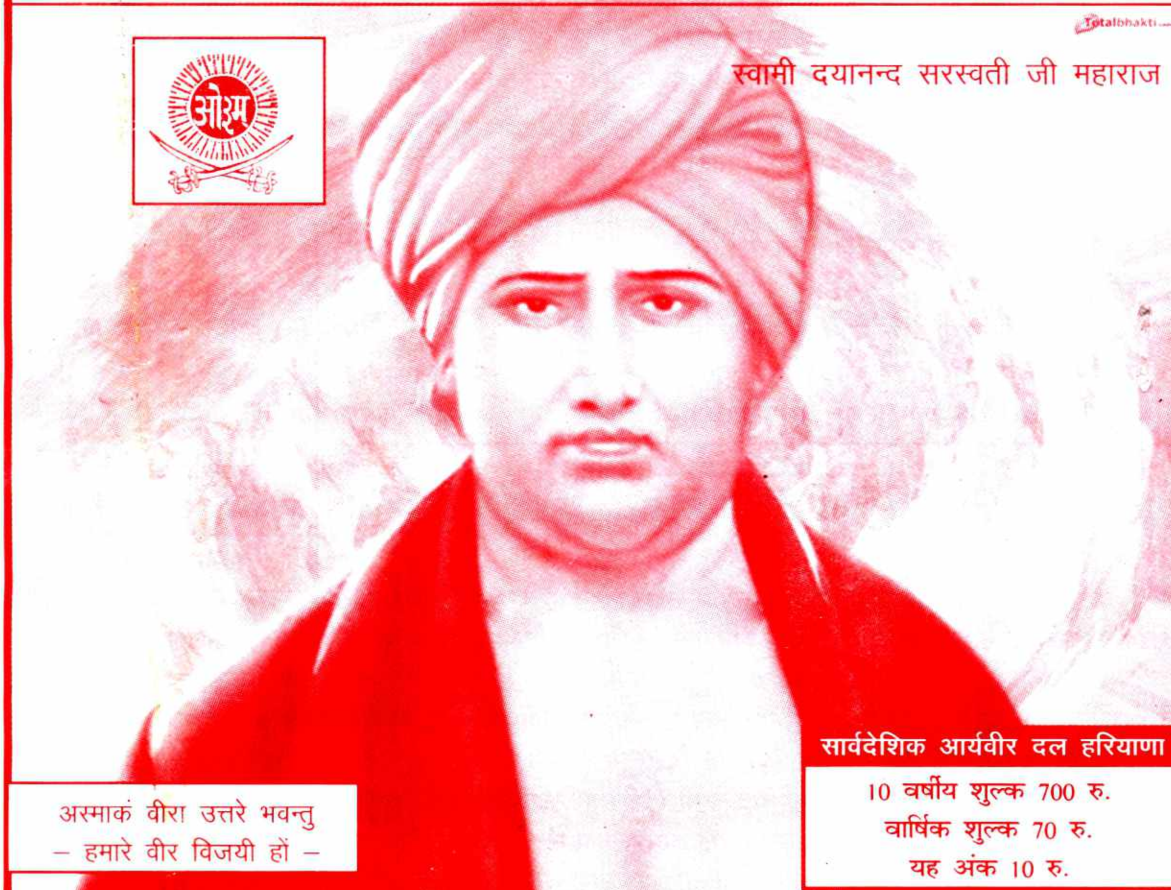

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु
– हमारे वीर विजयी हों –

सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरियाणा

10 वर्षीय शुल्क 700 रु.
वार्षिक शुल्क 70 रु.
यह अंक 10 रु.

विज्ञापन की दरें (वार्षिक)

अन्तिम पृष्ठ	7000/-
अन्तिम पृष्ठ रंगीन आधा	4000/-
अन्तिम अन्दर का रंगीन	6000/-
अन्दर के रंगीन पृष्ठ	4000/-
अन्दर का आधा (सादा)	2500/-

एक विज्ञापन पट्टी 250/- प्रति पृष्ठ, प्रति अंक

www.thearyasamaj.org

फूलों का गुलदस्ता

संकलनकर्ता- मनोहर लाल, प्रधान सम्पादक

1. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। (स्वामी दयानन्द सरस्वती)
2. राजा को चाहिये कि मनुष्यों की परीक्षा करे। सत्पुरुषों को सदा सम्मानित करें, दुष्टों को नियंत्रित करे, ऐसा राजा ही सब राजाओं में श्रेष्ठ है।
3. पहले हम स्वयं देवता बनें फिर दूसरों को देवता बनने में सहायता करें। बनो और बनाओ बस यही हमारा मन्त्र होना चाहिये। (विवेकानन्द)
4. व्यसन बहुत प्रकार के होते हैं, परन्तु दो व्यसन ही सच्चे व्यसन हैं। विद्याभ्यास का व्यसन और जन सेवा का व्यसन। (अज्ञात)
5. दाता के द्वार पर सभी भिक्षुक जाते हैं। अपना-अपना भाग्य है, किसी को एक चुटकी मिलती है, किसी को एक पूरा थाल। (प्रेमचन्द)
6. नेता के कुटिल चलने पर उसके सभी अनुयायी भी कुटिल चलने लगते हैं। (अज्ञात)
7. जब कोई दूसरे की जिन्दगी खुशहाल बनाता है तब उसकी जिन्दगी अपने आप खुशहाल बन जाती है। (जेम्स बेरी)
8. यदि हम निर्दोष हैं तो अपने दोष सुनकर मौन रहें। यदि दोष हैं तो अपने को ठीक करें। (स्वामी अखण्डानन्द)
9. विश्वास करें भगवान की शक्ति निरन्तर आपके साथ है।
10. सत्य पर चलना तलवार की धार पर चलना है। परन्तु सत्य संकल्प में बड़ी शक्ति है। धैर्यपूर्वक सत्य पथ पर दृढ़ रहना चाहिए। (वेद)

आर्य वीर विजय

सम्पादक मण्डल

मनोहर लाल आनन्द
प्रधान सम्पादक

सतीश कौशिक
व्यवस्थापक
☎ : 9312083458

उमेद सिंह शर्मा
संचालक
☎ : 9868956786

देश बंधु आर्य
संरक्षक
☎ : 9811140360

डॉ. (श्रीमती) विमल महता
संरक्षिका
☎ : 9350266601

अजीत कुमार आर्य
संरक्षक
☎ : 09794113456

श्री शिव दत्त आर्य
संरक्षक
☎ : 9810638622

संजीव कुमार मंगला
कानूनी परामर्शदाता
☎ : 9812271456

समस्त अवैतनिक

शिक्षा का उद्देश्य क्या है?

– श्री रामगोपाल, पत्रकार पलड़ी शिक्षक, सा. आर्य वीर दल

आज शिक्षा को लेकर जो हमारी धारणा बनी हुई है वह यह है कि पढ़-लिखकर अच्छी नौकरी मिले जिससे वह अपना जीवन व्यापन ठीक प्रकार से कर सके। अर्थात् शिक्षा को रोजी-रोटी से बाँध दिया गया है। यदि रोजी रोटी ही कमानी है तो मेरे हिसाब से शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि जो पढ़े-लिखे ज्यादा नहीं हैं। अनपढ़ भी है, ऐसे लोग पढ़े-लिखे लोगों से ज्यादा पैसा कमा रहे हैं। इसका प्रमाण भी आज समाज में दिखाई पड़ रहा है। चाहे वह स्वयं के बिजनैस के रूप में हो या राजनैतिक। अब प्रश्न उठता है कि जब अनपढ़ लोग पढ़े-लिखे लोगों से अधिक पैसा कमा रहे हैं तो शिक्षा (पढ़ने-लिखने) की जरूरत क्या है? लार्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली में खाली पन है, सूना पन है यह अपने आप में कसौटी पर खरी नहीं उतर पा रही है। शिक्षा को आज पेट से बाँध दिया गया है।

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है मानवता, शिष्टाचार। शिक्षा अध्ययन करने से हमें पता चलता है कि हम समाज में किस प्रकार रहें। समाज के लोगों से हम किस प्रकार का व्यवहार करें। समाज का एक जिम्मेदार नागरिक हम कैसे बने? देश और समाज के प्रति हमारा क्या कर्तव्य हो। शिक्षित लोगों की पहचान उसकी भाषा और व्यवहार से ही हो जाती है। आज हम देखते हैं कि पढ़े-लिखे शिक्षित लोग भी अनपढ़ों जैसा व्यवहार करते हैं। तो फिर शिक्षित और अशिक्षित लोगों में अन्तर ही क्या है। वास्तव में शिक्षा हमें जीवन-जीने की कला सिखाती है। जिसे हमें अपने जीवन में धारण कर यह साबित कर दिखाना चाहिये कि हम लोग शिक्षित हैं। ■

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

विश्वास और विश्वसनियता

दुर्भाग्य से हमारे देश में आज चरित्र का इतना पतन हो गया है कि किसी का किसी पर भरोसा ही नहीं रहा। पिता का पुत्रों पर भी भरोसा कम हो गया है। पिता ही अपनी बेटी, बहु की इज्जत लूटने लग गया जैसा कि समाचार पत्रों में ऐसी शर्मसार घटनायें पढ़ने-सुनने में आ रही हैं। हमारे देश में पांच महायज्ञों का प्रचलन था जिनमें एक पितृ यज्ञ था-अर्थात् माता-पिता की सेवा करना। यह दैनिक यज्ञ करने का विधान था और इसे महायज्ञ कहा गया है। आज बच्चे मां-बाप के आज्ञाकारी तो क्या उनको मां-बाप से बात-चीत भी करने का समय नहीं और कोई तो उनको खाने पीने को भी नहीं देते हैं और झिड़कते हैं। कहीं-कहीं तो मारपीट भी कर देते हैं। एक उच्चतम न्यायालय के अवकाश प्राप्त चीफ जस्टिस ने अपने बेटे के विरुद्ध इस प्रकार का मुकद्दमा भी दर्ज किया था। सरकार को मजबूर होकर वृद्ध स्त्री पुरुषों की सहायता के लिये कानून भी बनाये हैं। हरियाणा में तो हर जिले में एक एस.डी.एम की ड्यूटी भी ऐसे मामलों के निपटारे के लिये लगाई है। कितनी विडम्बना है कि जिस देश में माता पिता को पूज्य समझा जाता था आज उनको उनके बुढ़ापे में बुरी तरह से दुतकारा जाता है।

आज सरकार ने ऐसा माहौल कर दिया है कि सत्य पर चलना कठिन हो गया है। कानून ऐसे बनाये जाते हैं कि व्यक्ति को झूठ बोलना ही पड़ता है। हर जगह भ्रष्टाचार का बोलबाला है। कोई काम रिश्वत के बगैर होता ही नहीं है। जब कोई व्यक्ति रिश्वत मजबूर होकर देता है तो वह भी नम्बर 2 का पैसा कमाना शुरु कर देता है। एक व्यक्ति अपना मकान एक करोड़ में बेचता है तो चैक तो उसे 25 लाख का ही मिलता है और 75 लाख नम्बर 2 का काला धन मिलता है। वह तो न चाहते हुए भी बेईमान बन गया। इसका इलाज तो सरकार के पास है और तो कोई कुछ कर नहीं सकता। व्यवस्था दूषित हो गई है। वैसे कहने को कहा जाता है-

सत्य बराबर तप नहीं और झूठ बराबर पाप।
जां के हृदय सत्य है तांके हृदय आप।।

आज लोगों को तपस्वी नहीं बेईमान बनाया जाता है। आम आदमी की कहीं पूछ नहीं। सत्य प्रिय व्यक्ति का सरकारी नौकरी में जीना दूभर होता जा रहा है। निषपक्ष होकर काम करने से उसे परेशान किया जाता है।

हर जगह शराबी अवांछनीय तत्वों का बहुमत होता जा रहा है। कोई सुरक्षित नहीं है। सरे आम कत्ल होते हैं, लूटे जाते हैं, मार पिटाई होती है। सड़कों पर, दफ्तरों में, स्कूल में लड़कियां डर-डर कर जाती हैं। अपराधों के फैसले देर से होते है हैं। लोगों को कानून का डर नहीं रहा। Justice delayed is justice denied ऐसा कहा जाता है। देर से फैसलों के होने से अपराधी तत्वों को डर नहीं रहा। बड़े-बड़े अपराधी जेलों में अपने धन बल के कारण ऐश का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। कानून पर लोगों का विश्वास उठता जा रहा है। स्वार्थ बहुत बढ़ता जा रहा है, मानवता दम तोड़ रही है।

एक विचारिक का कहना है कि आज के युग में हर एक को झूठा, बेईमान, मक्कार समझो, जब तक कि उसको अच्छी तरह से परखा नहीं जाता। विश्वास यदि बगैर आजमाये कर लिया तो 90 प्रतिशत धोखा खाने की संभावना है। एक बार जिसको आजमाया और वह गलत निकला तो फिर उसे कभी न आजमाओ। आजमाये हुए को आजमाना गलती नहीं बेवकूफी होती है। प्रसिद्ध लेखक जार्ज बर्नाड शाह कहते है। 'Trust and be deceived – विश्वास करो और धोखा खाओ।'

आदि शंकराचार्य जी को विश्वास पात्र ने ही विष दिया था। स्वामी दयानन्द जी को भी विश्वास पात्र ने ही जहर दिया था। सोमनाथ के मन्दिर का भेद विदेशी आक्रमणकारी को भी विश्वास पात्र ने ही दिया था। कई क्रान्तिकारियों को भी विश्वास पात्रों ने ही पकड़वाया। इस लिये विश्वास किसी को परखे बगैर न करो।

– सम्पादक

www.thearyasamaj.org

बाग़ी दयानन्द

(गतांक से आगे)

सन् 1947 में मुसलमानों ने अपनी 25 प्रतिशत आबादी के बल पर पाकिस्तान प्राप्त कर लिया था। वह दिन दूर नहीं है जब ईसाई लोग भारत के पूर्वांचल में अपनी 75 प्रतिशत आबादी के बल पर ईसाइस्तान की माँग के लिए लड़ने लगेंगे। सन् 1990-91 में जब मिज़ोरम में चुनाव हुए थे वहाँ के बहुसंख्यक ईसाइयों ने काँग्रेस को इसलिए वोट दिये थे कि तत्कालीन प्रधानमन्त्री राजीव गांधी ने उन्हें आश्वासन दिया था कि यदि वहाँ काँग्रेस बहुमत में आयेगी तो काँग्रेस की सरकार बनने पर वहाँ शासन बाइबल के अनुसार होगा। जाननेवाले जानते हैं कि आज मिज़ोरम की स्थिति बहुत कुछ वैसी ही है, जैसी कश्मीर की।

भारत और पाकिस्तान के रूप में देश का बटवारा हो जाने पर पाकिस्तान ने स्वदेशोत्पन्न मुहम्मद अली जिन्नाह को अपना गवर्नर जनरल बनाया, जबकि भारत ने अपने को दो सौ वर्ष तक गुलाम बनाये रखनेवाले इग्लैंड में उत्पन्न लार्ड माउण्टबेटन को ही अपना गवर्नर जनरल बनाये रखने में अपना कल्याण समझा।

दिल्ली में लगभग तीन सौ आर्यसमाजें हैं। उन सबको एक सूत्र में बाँधकर सन् 1944 में मैंने आर्य केन्द्रीय सभा की स्थापना की थी। तब से ऋषि दयानन्द निर्वाणोत्सव प्रतिवर्ष इसी सभा के तत्वावधान में दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से सम्मिलित रूप से रामलीला मैदान में मनाया जाता है। स्वतन्त्र भारत में ऋषि निर्वाणोत्सव पहली बार सन् 1949 में मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में मैंने स्वतन्त्र देश के सबसे पहले भारतीय राष्ट्राध्यक्ष चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य को आमन्त्रित किया। इस समारोह की अध्यक्षता केन्द्रीय मन्त्री श्री नरहरि विष्णु गाडगिल ने की। गाडगिलजी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि "यदि यह देश ऋषि दयानन्द के मार्ग पर चला होता तो कश्मीर पाकिस्तन में न जाता।" श्री गाडगिल के इस वक्तव्य को मुसलिम अखबारों ने प्रमुखता से उछाला। जमैयत उल्मा-ए-हिन्द के अखबार अल जमीयत ने मोटे अक्षरों में इसे मुखपृष्ठ पर दिया। इसकी एक प्रति लेकर मौलाना अबुल कलाम आज़ाद प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू के पास पहुँचे और शिकायत की कि आपका मन्त्री शुद्धि का प्रचार करता है।

अगले साल (सन् 1950) मुख्य वक्ता के रूप में सरदार बल्लभभाई पटेल पधारे और उन्होंने अपने भाषण में कहा कि "यदि हमने ऋषि दयानन्द की बात मानी होती तो आज कश्मीर का मामला संयुक्त राष्ट्र संघ में लटका हुआ न होता।" इसके कुछ ही दिन बाद बम्बई में सरदार पटेल का निधन हो गया। इसलिए उनके इस कथन के अभिप्राय को उनसे मिलकर पूरी तरह न जाना जा सका, किन्तु कालान्तर में इण्डियन एक्सप्रेस नई दिल्ली के 7 जून 1990 के अंक में प्रकाशित एक वक्तव्य से पूरी तरह स्पष्ट हो गया। उसमें लिखा था-

"देश के स्वतन्त्र हो जाने पर यहाँ रहे ब्रिटिश सैनिक अधिकारियों ने भारत सरकार को कश्मीर का मामला संयुक्त राष्ट्र संघ को सौंपने की सलाह दी थी। इससे पाकिस्तान को कश्मीर के मामले को अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर उठाने का अवसर मिला। इसी के परिणामस्वरूप भारत को पाकिस्तान के तीन आक्रमणों का सामना करना पड़ा। कश्मीर की वर्तमान स्थिति स्वतन्त्र भारत में विदेशी सेनाधिकारियों को बनाए रखने का परिणाम है।" यह रहस्योद्घाटन मेजर जनरल राजेन्द्रनाथ (सेवानिवृत्त) ने अपनी पुस्तक "Military Leadership in India From Vedic Period of Indo-Pak War" में किया है।

"इन ब्रिटिश सेनाधिकारियों ने कश्मीर का विधिवत् विलय हो जाने पर भी बने-बनाये काम को बिगाड़ने का भरसक यत्न किया। सन् 1947 में पहली बार हुए पाकिस्तानी आक्रमण में इन अफसरों नेपरदे के पीछे से पाकिस्तान का साथ दिया।"

पुस्तक में आगे लिखा है-"27 नवम्बर 1947 तक भारत में रहे प्रधान सेनापति जनरल लॉकहार्ट और उसके बाद जनरल बुशेर पाकिस्तान के सेनाध्यक्षों को भारत-पाक युद्ध के दिनों में नियमित रूप से परामर्श देते रहे-दोनों का बराबर सम्पर्क बना रहा। वस्तुतः उन्होंने ही पठान कबायलियों और पाकिस्तान की नियमित सेनाओं के द्वारा सम्मिलित रूप में जम्मू-कश्मीर पर कब्जा करने की

www.thearyasamaj.org

योजना बनाई थी। सरदार पटेल और भारतीय सेनाधिकारियों के विरोध के बावजूद लार्ड माउण्टबेटन ने भारतीय सेनाधिकारियों को प्रशिक्षित करने के बहाने ब्रिटिश कमाण्डरों को रोक लिया था। लार्ड माउण्टबेटन की सहानुभूति पाकिस्तान के साथ थी। इतना ही नहीं, लार्ड माउण्टबेटन ने जनरल राजेन्द्रनाथ से स्वयं कहा था–'I must honestly tell you that I myself wanted Kashmir to join Pakistan.' अर्थात् मैं स्वयं कश्मीर के पाकिस्तान में विलय के पक्ष में था।"

सरदार पटेल के अनुसार यह सब ऋषि दयानन्द की बात न मानने के कारण हुआ। सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में उन्होंने लिखा है–"मन्त्री स्वराज्य स्वदेश में उत्पन्न होने चाहिएँ–वे जिनकी जड़ें अपने देश की मिट्टी में हों–जो विदेश से आयातित न हों और जिनकी आस्था अपने धर्म, संस्कृति, सभ्यता तथा परम्पराओं में हों। [सन् 1947 में हमारा देश भारत और पाकिस्तान के नाम से दो पृथक् स्वतन्त्र देशों में विभक्त हो गया। संयुक्त भारत के गवर्नर जनरल लार्ड माउण्टबेटन थे। विभाजन हो जाने पर पाकिस्तान ने स्वामी दयानन्द की मान्यता के अनुसार अपना गवर्नर जनरल स्वदेशोत्पन्न मुहम्मद अली जिन्ना को बनाया, परन्तु भारत ने लार्ड माउण्टबेटन के रूप में, इस देश को सैकड़ों वर्षों तक अपने अधीन गुलाम बनाये रखकर उसपर अत्याचार करनेवाले और जाते-जाते उसके टुकड़े कर जाने वाले तथा इतने विशाल साम्राज्य के छिन जाने से त्रस्त, इंगलैण्ड में उत्पन्न लार्ड माउण्टबेटन को ही अपना गवर्नर जनरल बनाये रखा। आज़ादी के बाद विदेशी ईसाई पादरियों ने अपना बोरिया बिस्तरा बाँधने का निश्चय कर लिया था, परन्तु पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया। पण्डित नेहरू का तर्क था कि भारत एक सेक्यूलर देश है। इसलिए यहाँ रहते हुए उन्हें धर्मप्रचार के कार्य में कोई बाधा नहीं होगी। इससे मिश्नरियों का साहस बढ़ गया और वे पहले से बढ़-चढ़कर अपना काम करने लगे। परिणामतः जनजाति बहुल सात राज्यों में से चार-मिज़ोरम, नागालैण्ड, मेघालय तथा अरुणाचल-ईसाईबहुल (70 से 100 प्रतिशत) हो गये हैं। सरकार और प्रशासन की कमजोरियों तथा जनता की अत्यधिक गरीबी के कारण ये राज्य अराष्ट्रीय गतिविधियों के केन्द्र बन गये हैं। वे कभी भी पाकिस्तान की तरह पृथक् स्वतन्त्र देश की माँग कर सकते हैं।] जनरल राजेन्द्रनाथ के अनुसार ऋषि के उक्त लेख की अवहेलना के कारण ही हमने इतनी हानि उठाई है और उठाते रहेंगे। विदेशी प्रशासक कुशल तो हो सकता है, पर हितैषी नहीं। अवसर मिलते ही काटने से नहीं चूकेगा।

(क्रमशः)

आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

आश्रम के 147वां स्थापना दिवस 21 सितम्बर, 2013 से 2 अक्टूबर 2013 तक बड़े धूमधाम से मनाया गया। ऋग्वेद परायण यज्ञ किया गया जिसकी पूर्णाहुति 2 अक्टूबर, 2013 को की गई। निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर भी लगाया गया जिसका भरपूर लाभ साधकों ने उठाया।

ऋषि उद्यान

परमहंस परिव्राजकाचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के

130वें बलिदान-समारोह

पर परोपकारिणी सभा के तत्वावधान में आयोजित

ऋषि मेला

निमन्त्रण एवं कार्यक्रम

कार्तिक शुक्ल षष्ठी से अष्टमी संवत् 2070 तदनुसार

दि. 8, 9, 10 नवम्बर, 2013

शुक्रवार, शनिवार, रविवार

–आयोजन स्थल–

ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर,

राजस्थान–305001

www.thearyasamaj.org

प्रान्तीय आर्य वीर दल का महासम्मेलन भारी उत्साहपूर्वक मनाया गया

देश की आज़ादी में 80 प्रतिशत योगदान आर्य समाज का-- चौ. महेन्द्र प्रताप सिंह

12 अक्टूबर, फरीदाबाद। आज अग्रवाल पब्लिक स्कूल, सैक्टर 3 में आर्य वीर दल हरियाणा का दो दिवसीय प्रान्तीय महासम्मेलन जोर-शोर से प्रारम्भ हुआ। सम्मेलन का प्रारम्भ यज्ञ से हुआ जिसके ब्रह्मा आचार्य ऋषिपाल तथा मुख्य यजमान डॉ. धर्म प्रकाश आर्य, पलवल थे। कन्या गुरुकुल भुसावर एवं हसनपुर की ब्रह्मचारिणियों ने मन्त्र पाठ किया। सारा पंडाल आर्यवीरों एवं आर्य वीरांगनाओं से भरा हुआ था।

इसके पश्चात् संस्कृति रक्षा सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता शिव कुमार आर्य ने की, मुख्य अतिथि विनय पंडित थे। विशिष्ट अतिथि रविन्द्र छाबड़ा थे। मुख्य वक्ता डा. धर्म प्रकाश दिल्ली प्रदेश थे। संगीत कु. प्रियंका भारती तथा बलराम आर्य ने दिया।

ध्वजारोहण कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए चौ. महेन्द्रप्रताप सिंह, राजस्व एवं खाद्य आपूर्ति मंत्री हरियाणा सरकार ने देश की आज़ादी का वर्णन करते हुए बताया कि 80 प्रतिशत आर्य समाजियों ने इसमें भाग लिया। महर्षि दयानन्द सरस्वती के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। भारत में सबसे अधिक युवाशक्ति है। इनका सम्मान किया जाना चाहिए।

ध्वजारोहण डॉ. योगानन्द शास्त्री, अध्यक्ष दिल्ली विधान सभा ने किया।सम्बोधन स्वामी देवव्रत आचार्य ने किया।

ध्वजारोहण के उपरान्त विशाल शोभा यात्रा का आयोजन हुआ। इसमें रथों पर आचार्य देवव्रत जी प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्य वीर दल, उमेद शर्मा, संचालक आर्य वीर दल हरियाणा, सत्यवीर आर्य, संचालक आर्य वीर दल राजस्थान, आचार्य ऋषिपाल आर्य, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ थे। आगे आगे बैंड धुनें बजाते हुए चल रहे थे। शोभा यात्रा का स्वागत बाजार में अनेक आर्य समाजों, व्यापार मण्डल एवं नगरवासियों ने खुले दिल से किया। आर्य वीरों पर पुष्प वर्षा की गई। मुख्य अतिथियों का फूल मालाओं से स्वागत किया।

शोभा-यात्रा में आचार्य बलदेव जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा (सार्वदेशिक), स्वामी देवव्रत जी प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल, आचार्य ऋषिपाल व्यवस्थापक गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ विशेष आकर्षण केन्द्र रहे। सभी शिक्षकों का योगदान अभूतपूर्व रहा।

13 अक्टूबर, फरीदाबाद
भव्य व्यायाम प्रदर्शन के साथ प्रान्तीय आर्य वीर महासम्मेलन सम्पन्न

दो दिवसीय प्रान्तीय आर्यवीर महासम्मेलन में आज 2000 आर्यवीरों एवं 1000 आर्य वीरांगनाओं ने चित्ताकर्षक भव्य व्यायाम प्रदर्शन दिखाया। प्रदर्शन में पथ-संचलन, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, नियुद्धम्, आसन-प्राणायाम, मलखम्ब, लेज़ियम, धनुर्विद्या तथा भाला, तलवार प्रदर्शन दिखाया। दर्शकों ने करतल ध्वनि कर उनका उत्साहवर्द्धन किया।

इसके पूर्व आचार्य ऋषिपाल आर्य, संचालक गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के ब्रह्मत्व में बृहद् यज्ञ हुआ। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए आचार्य बलदेव जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्यवीरों को आशीर्वाद दिया। मुख्य वक्ता डॉ. राजेन्द्र वेदालंकार, महामंत्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल ने सरदार वल्लभ भाई पटेल त4था श्रीमती इन्दिरा गांधी की ललकार को याद करते हुए देश की एकता की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम का संयोजन हरिश्चन्द्र शास्त्री ने किया।

प्रान्तीय अधिकारियों में उमेद सिंह शर्मा, संचालक, वेद प्रकाश आर्य, महामन्त्री, कर्ण सिंह आर्य, कोषाध्यक्ष मुख्य रूप से उपस्थित थे। डॉ. (श्रीमती) विमल महता, प्रधाना आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद, देश बन्धु आर्य, होतीलाल आर्य, मण्डलपति, जयपाल शास्त्री, आचार्य विजयपाल जी, चांद सिंह शर्मा, देव राज आर्य, ब्र. राज सिंह आर्य, संदीप आर्य, सचिन आर्य, पोहप सिंह आर्य, हरिओम आर्य एवं अनेक शिक्षक उपस्थित रहे।

सम्मेलन में मनधीर सिंह मान, सतबीर सिंह डागर, ऋषिपाल आर्य, चौ. राजेन्द्र सिंह बीसला का स्वागत किया गया। आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं, दान दाताओं का हार्दिक धन्यवाद किया गया। दिल्ली से पधारे विजय आर्य, डॉ. ओउम् प्रकाश आर्य का हार्दिक स्वागत किया गया।

– अजीत कुमार आर्य, प्रेस सचिव

www.thearyasamaj.org

देशभक्त महर्षि दयानन्द

– श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

जिस प्रकार स्वामी दयानन्द ने गोरक्षा और हिन्दी के लिए सार्वजनिक आन्दोलन का नेतृत्व किया, उस प्रकार उन्होंने न तो देश की स्वाधीनता के लिए किसी आन्दोलन का नेतृत्व किया और न ऐसे किसी आन्दोलन में कोई सक्रिय भाग लिया, किन्तु अपने चिन्तन, लेखनी और वाणी द्वारा इसमें सहयोग करने में वे पीछे नहीं रहे। भारतीयों को भ्रमित करने के विचार से आर्य–द्रविड़ जातियों के सिद्धान्त की कल्पना लण्डन की रॉयल एशियाटिक सोसायटी जर्नल, लण्डन, नयी मलिका 5, पृष्ठ 420 की टिप्पणी के अनुसार यह सभा राइट ऑनरेबल वाइकाउंट स्ट्रांगफीलड की अध्यक्षता में हुई थी। मिस्टर एडवर्ड टॉमस ने चौथे शीर्षक के अन्तर्गत चर्चा का आरम्भ करते हुए कहा कि 'ऑक्सस नदी से आर्यन आक्रामकों की लहरें अरिमातिया प्रान्त और हिन्दुकुश के मार्ग से भारत में प्रविष्ट हुई।' तदनुसार प्राइमरी से लेकर यूनिवर्सिटी स्तर तक की पुस्तकों में पढ़ाया जाने लगा कि आर्यों ने भारत पर आक्रमण किया और यहाँ के आदिवासियों को परास्त कर इस देश पर बलात् अधिकार करके यहाँ बस गये। इसी आधार पर आज मांग की जा रही है कि अन्य विदेशियों (मुसलमानों और ईसाइयों) की भांति, आर्यों (हिन्दुओं) को भी, देश को आदिवासियों को सौंपकर जाना होगा, 'दोज ह्यू केम् फर्स्ट मस्ट् लीव फर्स्ट।' इसी आधार पर 4 सितम्बर, 1977 को संसद में राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत सदस्य फ्रेंक एन्थोनी ने माँग की, "Sanskrit should be deleted from the eight schedule of the constitution because it is a foreign language brought to this country by foreign invaders, the Aryans." (Indian Express', New Delhi, 5.9.77) अर्थात् 'संस्कृत को संविधान के आठवें अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन परिशिष्ट से हटा देना चाहिये, क्योंकि वह विदेशी भाषा है, जिसे विदेशी आक्रमणकारी, आर्य इस देश में लाये।' यदि सचमुच हम भी विदेशी आक्रमणकारी हैं तो हमें स्वतन्त्रता मांगने का क्या अधिकार है?

भारत के स्वाधीनता संग्राम में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का शीर्षस्थान है, और उसका एक बड़ा कारण है, आन्दोलन को उनका दिया 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' यह उद्घोष, परन्तु यह उद्घोष इस देश के आदिवासी या मूल निवासी ही कर सकते हैं, अन्य नहीं। जैसे किसी के घर पर लाठियों से हमला करके और उसमें रहनेवालों को मार पीट कर खदेड़ देने और उसपर अधिकार कर लेनेवाला उस घर पर अपना जन्मसिद्ध अधिकार नहीं जता सकता, वैसे ही इस देश में पहले से रह रहे लोगों को मारकर उसपर अधिकार जमानेवाले विदेशी आक्रमणकारी आर्य भी अपना जन्मसिद्ध अधिकार नहीं जता सकते। लोकमान्य तिलक भी यही मानते थे कि आर्य लोग विदेशी आक्रमणकारी हैं, जिन्होंने यहाँ के आदिवासियों से इस देश को छीनकर इस पर बलात् अधिकार कर लिया था। इसलिए बात ठीक होते हुए भी लोकमान्य तिलक और उनके मतानुयायी यह नारा नहीं लगा सकते।

आर्य लोग इस देश के मूल निवासी है।, न वे बाहर से आये और न उनसे पहले दूसरा कोई यहाँ बसता था, इसलिए यह देश 'आर्यावर्त' है–और उनका इस देश पर जन्मसिद्ध अधिकार है। इस प्रकार इस देश की स्वाधीनता की मांग को वैधानिक अधिकार देनेवाला सबसे पहला व्यक्ति दयानन्द था। यदि हम दयानन्द की इस बात को स्वीकार नहीं करते तो विदेशी होने के कारणप अंग्रेज़ों की तरह एक न एक दिन हमें भी यहाँ से भागना होगा।

वस्तुतः उस व्यक्ति, दल या संगठन को इस देश पर शासन करने का कोई अधिकार नहीं है, जो अपने आपको विदेशी या विदेशी मूल का स्वीकार करता है।

स्वामी दयानन्द पहला व्यक्ति था जिसने देश की स्वाधीनता के विरोधी इस विचार पर कुठाराघात करते हुए कहा, 'किसी संस्कृत–ग्रन्थ वा इतिहास में नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आये और यहाँ के जंगलियों से लड़कर, जय पाके, निकालके इस देश के राजा हुए, पुनः विदेशियों का लेख कैसे माननीय हो सकता है?'

www.thearyasamaj.org

पुनः सन् 1857 की क्रान्ति के विफल हो जाने पर 1 नवम्बर, 1858 को महारानी विक्टोरिया ने अपनी इच्छा घोषित करते हुए यहाँ के लोगों को विश्वास दिलाया था कि 'हमारी अपनी मान्यताओं के कारण किसी के प्रति किसी प्रकार का पक्षपात नहीं किया जाएगा और किसी के साथ ज्यादती नहीं की जाएगी। इसके विपरीत सबको समानरूप से कानूनी संरक्षण प्राप्त होगा और अपने अधीन समस्त कर्मचारियों को हम सावधान करते हैं कि यदि किसी ने हमारी प्रजा के धार्मिक विश्वास और पूजाविधि में दखल दिया तो उसे हमारे कोप का शिकार होना होगा।'

जहाँ इण्डियन नेशनल कांग्रेस ने महारानी विक्टोरिया की इस घोषणा का स्वागत किया वहाँ दयानन्द ने इसे ठुकराते हुए स्पष्ट कह दिया 'कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रहरहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर माता पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है।'

दयानन्द के इन शब्दों में महारानी विक्टोरिया की घोषणा का तुर्की-ब-तुर्की जवाब है। दिल्ली में सन् 1944 (20 से 22 फरवरी) को सम्पन्न आर्य महासम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने दयानन्द के इस जवाब पर टिप्पणी करते हुए अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा था, "Could there be a bolder declaration of a country's declaration of war against foreign domination?" अर्थात् 'विदेशी हुकूमत के विरुद्ध किसी देश द्वारा युद्ध घोषणा का क्या इससे बढ़कर ऐलान हो सकता था?'

सन् 1911 की जनसंख्या के अध्यक्ष (सेंसस कमिश्नर) मिस्टर ब्लण्ट ने आर्यसमाज की समीक्षा करते हुए लिखा था, "The Arya Samajic doctrine has a patriotic side. The Arya doctrine and Arya education alike sing the glories of ancient India and by so doing arouse a feeling a national pride in its disciples who are made to feel that their country's history is not a tale of humiliation. Patriotism and politics are not synonymous, but the arousing of an interest in national affairs is a natural result of arousing national pride." (Census Report of 1911, Vol. XV, Part I, Chap IV, P. 135) अर्थात् 'आर्यसमाज के सिद्धान्तों में स्वदेशप्रेम की प्रेरणा है। आर्य सिद्धान्त और आर्य शिक्षा समान रूप से भारत के प्राचीन गौरव के गीत गाते हैं और ऐसा करके अपने अनुयायियों में राष्ट्र के प्रति गौरव की भावना को जागरित करते हैं। इस शिक्षा के फलस्वरूप वे समझते हैं कि हमारे देश का इतिहास पराभव की कहानी नहीं है। देशभक्ति और राजनीति एकार्थवाची नहीं है, किन्तु राष्ट्रीय कार्यों में रुचि या प्रवृत्ति राष्ट्रीय भावना का स्वाभाविक परिणाम है।'

मिस्टर ब्लण्ट के कथन की यथार्थता को जानने के लिए दयानन्द के 'सत्यार्थप्रकाश' के 11वें समुल्लास में उल्लिखित इन शब्दों पर ध्यान देना पर्याप्त होगा, - 'यह आर्यावर्त ऐसा देश है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा देश नहीं है। इसीलिए इस भूमि का नाम स्वर्णभूमि है, क्योंकि यह स्वर्ण आदि रत्नों को उत्पन्न करती है।.... जितने भूगोल में देश हैं वे सब इस देश की प्रशंसा करते हैं और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है। यह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त देश ही ऐसा है जिसको लोहेरूपी विदेशी छूते ही स्वर्ण, अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं सृष्टि के आदि से लेकर पांच सहस्त्र वर्षों से पूर्व पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती, अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि राज्य था। अन्य देश माण्डलिक, अर्थात् छोटे-छोटे राजा रहते थे।'

ब्लण्ट के अनुसार स्वदेश के प्रति जागरित इस गौरवगान का यह परिणाम हुआ कि लोगों में अपने खोये गौरव को फिर से पाने की लालसा का बल मिला। किसी भी मामले में विदेशियों के सामने सिर झुकाना दयानन्द को सह्य नहीं था। वह लिखते हैं, 'जब अपने देश में सब सत्य विद्या, सत्य धर्म और परम योग की सब बातें थीं और अब भी हैं, तब विचारिए कि थियोसोफिस्टों को स्वदेशवासियों के मत में मिलना चाहिये या आर्यावर्तियों को थियोसोफिस्ट बनना चाहिये?'

ब्राह्मसमाज के खण्डन के प्रकरण में यह बात और भी अधिक स्पष्टता से उभरकर आती है, 'इन लोगों में स्वदेशभक्ति बहुत कम है। ईसाइयों के बहुत से आचरण लिये हैं। अपने देश की प्रशंसा और पूर्वजों की बड़ाई करना तो दूर रहा, उनके स्थान में भरपेट निन्दा करते हैं। ब्रह्मादि ऋषियों का नाम भी नहीं लेते, प्रत्युत

www.thearyasamaj.org

ऐसा कहते हैं कि बिना अंग्रेजों के सृष्टि में आज पर्यन्त कोई विद्वान् ही नहीं हुआ, आर्यावर्तीय सदा से मूर्ख चले आये हैं, उनकी उन्नति कभी नहीं हुई। .... भला जब आर्यावर्त में उत्पन्न हुए हैं और इसी का अन्न जल खाया पिया, अब भी खाते पीते हैं, तब अपने माता पिता, पितामह आदि के मार्ग को छोड़कर दूसरे विदेशी मतों पर झुक जाना ब्राह्मसमाजी और प्रार्थनासमाजियों का एतद्देशस्थ संस्कृत विद्या से रहित अपने को विद्वान प्रकाशित करना, इंगलिश पढ़ के पण्डिताभिमानी होकर एक नया मत चलाने में प्रवृत होना मनुष्यों का वृद्धिकारक काम क्योंकर हो सकता है?'

कितना स्वदेशाभिमानी था दयानन्द! सन् 1901 में जनसंख्या के अध्यक्ष (सेंसस् कमिश्नर) मिस्टर बर्न थे। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में लिखा था–"Dayananda feared Islam and Christianity because he considered that the adoption and adaptation of any foreign creed would endanger the national feelings he wished to foster." अर्थात् 'दयानन्द इस्लाम तथा ईसाइयत के प्रति इसलिए शंकितथे, क्योंकि वे समझते थे कि विदेशी मतों के अपनाने से देशवासियों की राष्ट्रीयता की भावनाओं को क्षति पहुँचेगी, जिन्हें वे पुष्ट करना चाहते थे।'

इसमें सन्देह नहीं कि हमारी दासता की बेड़ियों को सुदृढ़ करने में ईसाइयों ने अंग्रेजों के कन्धे से कन्धा मिलाकर काम किया है। जब तक किसी देश के लोगों में स्वाभिमान की भावना रहती है तब तक विदेशी शासन के स्थायित्व पर प्रश्नचिह्न लगा रहता है। इसी भावना को नष्ट करने के लिए ईसाइयत ने हिन्दुस्तानियों को असभ्य और जंगली बताकर उनमें हीनता की भावना को उभारने का यत्न किया। इसका इससे बड़ा प्रमाण और क्या होगा कि जब 1876 में प्रिंस ऑफ वेल्स भारत में आये तो बम्बई के गवर्नर लॉर्ड री ने ईसाई मिशनरियों के शिष्टमण्डल को उनके सामने प्रस्तुत करते हुए कहा था, "They are doing in India more than all thoses civilians, soldiers, judges and governors your Highness has met." अर्थात् 'जितना काम आपके सिपाही, जज और गवर्नर कर रहे हैं, उससे कहीं अधिक वे मिश्नरी कर रहे हैं।'

इतना ही नहीं, स्वाधीनता के प्रथम युद्ध की समाप्ति के दो वर्ष बाद इंगलैण्ड के तत्कालीन प्रधानमंत्री लॉर्ड पामर्स्टन ने घोषणा की थी, "It is not only our duty but in our own interest to promote the diffusion of Christianity as far as possible throughout the length and breadth of India." ('Christianity and Government of India', by Mathew, Page 194), अर्थात् 'यह हमारा कर्तव्य ही नहीं अपितु हमारा हित इसी में है कि समूचे भारत में ईसाइयत का प्रचार प्रसार हो।' स्मरण रहे कि इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री ने यह घोषणा अपनी महारानी की पूर्वोद्धृत घोषणा के एक वर्ष बाद की थी।

इस्लाम के इतिहास से, सभी भली भांति परिचित हैं। यह ठीक है कि भारत में रहने वाले प्रायः सभी मुसलमान मूलतः इसी देश के वासी हैं, किन्तु आठ सौ वर्ष से इस धरती के अन्न जल से पोषण पाकर भी वे इस देश के नहीं बन सके। भारत के मुसलमानों ने कभी इस देश पर शासन नहीं किया। शासन करने वाले मुगल, पठान, खिलजी, लोदी, गोरी आदि सभी आक्रमणकारी विदेशी मुसलमान थे, परन्तु जितना गर्व उन्हें इन विदेशी आक्रमणकारियों और इस देश के लोगों पर अत्याचार करनेवालों पर है, उतना इस देश में पैदा हुए राम, कृष्ण और ऋषि मुनियों पर अथवा इस देश के लिए मर मिटने वाले राणा प्रताप, शिवाजी आदि पर नहीं है।

मिस्टर ब्लण्ट ने ही एक बात और लिखी है, "Dayananda was not merely a religious reformer, he was a great patriot. It would be fair to say that with him religious reform was a mere means to national reform." अर्थात् 'दयानन्द मात्र धार्मिक सुधारक नहीं था। वह एक महान् देशभक्त था। यह कहना ठीक होगा कि उसके लिए धार्मिक सुधार राष्ट्रीय सुधार का एक उपाय था।' ब्लण्ट ने बड़े पते की बात कही है। इसमें सन्देह नहीं कि दयानन्द ने पाखण्डों और परस्पर विरोधी मतों का खण्डन इसलिए किया कि इनके रहते, दयानन्द के अपने शब्दों में 'परस्पर एकता, मेल मिलाप या सद्भाव न रहकर ईर्ष्या, द्वेष, विरोध और लड़ाई झगड़ा ही होगा। यदि ऐसे पाखण्ड न चलते तो आर्यावर्त की दुर्दशा क्यों होती?' दयानन्द ने सबसे अधिकखण्डन मूर्तिपूजा का किया है। इस प्रकरण में उन्होंने मूर्तिपूजा से होने वाली 16 हानियों का उल्लेख किया है जिनमें से अधिकतर का सम्बन्ध उसके कारण देश को होनेवाली हानियों से है। वे मिलते हैं, 'नाना प्रकार की विरुद्धस्वरूपनाम

www.thearyasamaj.org

चरित्र युक्त मूर्तियों के पुजारियों का ऐक्य मत नष्ट होके विरुद्ध मत में चलकर आपस में फूट बढ़ाके देश का नाश करते हैं। जो मूर्ति के भरोसे शत्रु का पराजय और अपना विजय मानके बैठे रहते हैं उनका पराजय होकर राज्य, स्वातन्त्रय और सुख उनके शत्रुओं के अधीन हो जाता है। क्यों पत्थर पूजकर सत्यानाश को प्राप्त हुए? देखो, जितनी मूर्तियां पूजी हैं उनके स्थान पर शूर वीरों की पूजा करते तो कितनी रक्षा होती?

राष्ट्रोत्थान के लिए एकता आवश्यक है। दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में अनेकत्र इस बात पर बल दिया है। उनका कहना है, 'जब तब एक मन, एक हानि लाभ, एक सुख दुःख न मानें, तक तक उन्नति होना बहुत कठिन है।' जब भूगोल में एक मत था, उसी में सबकी निष्ठा थी और एक दूसरे का सुख दुःख, हानि लाभ आपस में समान समझते थे, तभी एक सुख था, परन्तु दयानन्द के अनुसार 'भिन्न भिन्न भाषा, पृथक् पृथक् शिक्षा, अलग व्यवहार का, विरोध का छूटना अतिदुष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।' एकता सम्मेलन समझौते का आधार बन सकते हैं, एकता का नहीं; समझौतों से सामयिक समस्या का समाधान भले ही हो जाए, उसमें स्थायित्व नहीं आ सकता। ऐसे उपायों से रोग दब सकता है, किन्तु नष्ट नहीं हो सकता। इतना ही नहीं, कालान्तर में वह और भी उग्र रूप धारण कर सकता है।

एक दिन श्री मोहनलाल विष्णुलाल पाण्डया ने स्वामी दयानन्द से पूछा, भगवन्! भारत का पूर्ण हित कब होगा? यहाँ जातीय उन्नति कब होगी?' स्वामीजी ने उत्तर दिया, 'एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति होना कठिन है। सब उन्नतियों का केन्द्रस्थान ऐक्य है। जहाँ भाषा, भाव और भावना में एकता आ जाए वहाँ सागर में नदियों की भांति सारे सुख एक एक करके प्रवेश करने लगते हैं। मैं चाहता हूँ कि देश के राजे महाराजे अपने शासन में सुधार और संशोधन करें। अपने राज्य में धर्म, भाषा और भावों में एकता करें। फिर भारत भर में आप ही आप सुधार हो जाएगा।'

(शेष अगले अंक में)

चुनाव सम्पन्न

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव का वार्षिक अधिवेशन श्री ओम प्रकाश कालड़ा एवं श्री बलदेव कृष्ण गुगलानी की अध्यक्षता में आर्य समाज नई कालोनी में सम्पन्न हुआ। जिसमें गुप्त मतदान द्वारा चुनाव किया गया और मा. सोम नाथ जी को प्रधान चुना गया। मा. सोमनाथ जी को 33 और श्री कन्हैया लाल आर्य जी को 22 मत प्राप्त हुये। सर्वसम्मति से प्रधान मा. सोमनाथ जी को अपना मन्त्रीमण्डल गठन का अधिकार दिया गया।

प्रधान – मा. सोमनाथ, उपप्रधान – चन्द्र प्रकाश गुप्ता, महामन्त्री – प्रभु दयाल चुटानी, मन्त्री – बलदेव कृष्ण गुगलानी।

विभिन्न सभा सदों ने संगठन की उन्नति हेतु अपने सुझाव दिये और प्रधान मा. सोमनाथ जी ने सभा के कार्यों को गति प्रदान करने हेतु सभी से सहयोग की अपील की और सभी का धन्यवाद किया।

– ओम प्रकाश चुटानी, प्रैस सचिव

चुनाव सम्पन्न

आर्य वीर नेत्र चिकित्सालय (पंजीकृत), गुड़गांव का वार्षिक अधिवेशन श्री शिवदत्त आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री भारत भूषण आर्य को सातवीं बार सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित किया गया। अन्य अधिकारियों के मनोनयन का अधिकार सभा ने प्रधान जी को दिया।

प्रधान–भारत भूषण आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान–मा. सोमनाथ आर्य, उप-प्रधान – सोमनाथ मल्होत्रा, महामन्त्री–प्रवीण मदान, मन्त्री– नरेन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष –शिव दत्त आर्य

– सोमनाथ, वरिष्ठ उप-प्रधान

www.thearyasamaj.org

पिता जी नमस्ते

– विश्वामित्र सत्यार्थी

अभिवादन की प्रथा

विभिन्न राष्ट्रों के नागरिक परस्पर मिलने पर अपनी भाषा में अभिवादन करके अन्योन्य का स्वागत करते हैं। अपनी अनभिज्ञता के कारण, उनकी भाषा के अभिवादन में प्रयुक्त किए जाने वाले शब्दों का मैं यहाँ उल्लेख नहीं कर सकूँगा। अपने देश की प्रान्तीय भाषा–बोलियों में अनेकों का परिचय कराने की भी मेरी सीमित क्षमता है। अधिकांशतया नमस्ते, प्रणाम, नमस्कार, जय राम जी की, जय श्रीकृष्ण, जय श्री राम, सतश्री अकाल, असलामलेकुम एवं गुडमार्निंग इत्यादि सुपरिचित अभिवादनों का अपने देश में प्रचलन है।

उद्घोष–जयघोष एवं अभिवादन में अन्तर

अभिवादन एवं उस में प्रयोग किए जाने वाले कुछ शब्दों का ऊपर उल्लेख किया गया है। किसी की विशेषता को स्वाभिमान पूर्वक प्रकट करने वाले शब्दों को उद्घोष–जयघोष कहा जाता है, जैसे वन्देमातरम्, भारत माता की जय, जयहिन्द, जय भारत, जो बोले सो निहाल, अल्ला हो अकबर, इनकलाब जिन्दाबाद, जय जवान–जय किसान आदि।

महापुरुषों के नाम अभिवादन का स्थानापन नहीं हो सकते

महापुरुषों के सम्मान एवं उनके वचनों को चरितार्थ करना अच्छी बात है। उनका पुण्य स्मरण करके, उनके आदर्शों को जीवन में उतारना ही उनका वास्तविक समादर है। केवल नामोच्चार, एक प्रकार से ढोल पीटने वाली बात है। उनके नाम एवं काम दोनों का जीवन समन्वय करना ही, उनका उत्तराधिकारी होने का प्रमाण है। जयराम, जय श्री राम, जय श्रीकृष्ण, जय हनुमान, जय भवानी, जय गुरुदेव, जय माता की एवं जय बाबा की इत्यादि उनके नामोच्चार मात्र हैं। ये अभिवादन नहीं हैं।

वैदिक अभिवादन 'नमते' है

हमारे पुरातन साहित्य में अभिवादन के लिए अनेकशः नमस्ते का ही उल्लेख मिलता है। समय–समय पर प्रचलित मत–पन्थों के अनुयायियों ने, अपनी मान्यता को प्रमुखता देने के लिए मतानुसार अथवा उनके संचालकों के नामों को अभिवादन का स्थान देना प्रारम्भ कर दिया एवं यह यदाकदा परस्पर जाति–मत–पन्थ के नाम पर टकराने–लड़ने का एक अभिशाप बन गया है। मानव इतिहास इसके रक्तरंजित परिणामों से सुपरिचित है एवं इससे उसे छुटकारा नहीं मिल रहा है।

पिता जी नमस्ते

परिवार में पूज्य–वृद्धजनों के चरणस्पर्श करके पिताजी, माता जी, दादा जी, दादी जी को नमस्ते करने में जो समादर की अभिव्यक्ति होती है, वह किसी अन्य शब्द से कदापि असम्भव है। वे भावविह्वल हो कर एवं शिर पर हाथ रख कर, जब कहते हैं कि आयुष्मान् भव, सौभाग्यवती भव, सदा आनन्दित रहो एवं सुखी रहो तो मानों कि आकाश से ईश्वरीय वरदान की वर्षा हो रही है। समय के परिवर्तन के साथ, इस चिन्तन में जैसे जैसे परिवर्तन आ रहा है, मानों अभिशापों की ओलावृष्टि हो रही है। यह अत्यन्त पीड़ा एवं दुर्भाग्य का सूचक है जिसकी काली छाया से हम घिरते जा रहे हैं। इस दुरावस्था को हमें ही स्वयं के सद्प्रयासों से सुधारना तथा पुनः प्रतिष्ठित करना है।

गुरु जी नमस्ते

मैं अनुशासन की स्थापना के लिए कठोरता अपनाने वाला अध्यापक रहा हूँ। इस रूप में मैंने मान–अपमान दोनों का स्वाद चखा है। अनायास बस, रेलगाड़ी में यात्रा काल में अथवा किसी सार्वजनिक स्थान पर कोई अपरिचित आ करके चरण स्पर्श करके जब कहता है–"गुरु जी नमस्ते, आपने मुझे पहचाना है, आप हमारे मुख्याध्यापक जी हैं, आप की बातें याद आती हैं।" इस संस्मरण से मुझे सन्तोष होता है कि छात्रों के हितार्थ की गई कठोरता उपयोगी थी। समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त अनेक पुराने विद्यार्थियों के इस समादर व्यवहार से मुझे आत्मसन्तोष एवं आत्मगौरव की अनुभूति का आनन्द प्राप्त होता है। ईश्वर से यह

www.thearyasamaj.org

प्रार्थना करता हूँ कि गुरु शिष्य की पिता-पुत्रवत् परम्परा के साथ सुखद-स्वस्थ वातावरण की यथाशीघ्र पुनप्रतिष्ठा हो जाए।

गुरुजनों-पूज्यों को नमस्ते

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय।। यजु 16.32

शब्दार्थ-हे मनुष्यों! (ज्येष्ठाय) आप से जो आयु-ज्ञान में बड़े हैं, उन वृद्धों-गुरुओं (च) और (पूर्वजाय) ज्येष्ठ भ्राता वा ब्राह्मण (च) तथा (कनिष्ठाय) छोटे बालक-बालिकाओं के साथ (नमः) यथास्थान सादर सत्कार-सम्मान और स्वागत-स्नेह का आदान-प्रदान कीजिए।

भावार्थ- इस मंत्रांश में स्पष्ट किया गया है कि परस्पर मिलते समय नमस्ते शब्द का प्रयोग करें। आयु-ज्ञान में बड़े तथा बड़े भ्राताओं-ब्राह्मणों का इस अभिवादन से सम्मान-स्वागत कीजिए।

इसी प्रकार अपने से छोटे बालक-बालिकाओं को, इससे आशीर्वाद दीजिए। सभी वर्ण-वर्ग तथा जाति-पाँति वाले समानरूप से नमस्ते का प्रयोग कर सकते हैं।

कवितार्थ

नमस्ते वैदिक अभिवादन का,
सर्वजन प्रयोग कर सकते हैं।
नत्मस्तक हो गुरु, वृद्धजनों का,
सतत शुभ आशीष पा सकते हैं।
नमन कर भूदेव, भ्राता का,
सम्मान, स्नेह बढ़ा सकते हैं।
नित्य समस्त छोटे बालकों का,
सहर्ष उत्साह बढ़ा सकते हैं।

■

महर्षि दयानन्द सेवाधाम ट्रस्ट, सैक्टर 7, फरीदाबाद

सर्वे सन्तु निरामयाः

प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र महर्षि दयानन्द सेवा धाम ट्रस्ट (पंजीकृत) आर्य समाज सैक्टर 7ए, फरीदाबाद (हरि.) चिकित्सालय में सभी प्रकार की बीमारियों का इलाज पंच तत्वों (मिट्टी, पानी, धूप, हवा, आकाश) के माध्यम से किया जाता है। किसी प्रकार की दवाई का प्रयोग नहीं किया जाता है।

आर्य समाज की प्रमुख गतिविधियों में से एक प्राकृतिक चिकित्सा लगभग दस वर्षों से निरन्तर ही समाज के लोगों को निरोगी करती चली आ रही है।

महिला तथा पुरुषों के इलाज की अलग-अलग व्यवस्था है। सक्षम तथा कुशल स्टाफ समाज की सेवा में कार्यरत हैं।

निराश न हों तथा जीर्ण रोगों के इलाज के लिए सम्पर्क करें।

नोट : साढे तीन वर्षीय एन.डी.डी.वाई. डिप्लोमा कोर्स के लिए सम्पर्क करें।

– चिकित्सा अधिकारी डा. विजेन्द्र सिंह (सागर जी), दूरभाष : 9210291284

www.thearyasamaj.org

क्रांतिकारी अरविन्द घोष

– सुभाष चन्द्र गुप्ता

श्री अरविन्द का जन्म 15 अगस्त, 1872 को कलकत्ता में हुआ था। 1890 में श्री अरविन्द ने इण्डियन सिविल सर्विस (ICS) की परीक्षा पास की, परन्तु उसे अपने स्वभाव के अनुकूल न पाकर स्वतः इतनी उच्चतम सेवा को त्याग दिया। अपने विद्यार्थी जीवन में श्री अरविन्द केम्ब्रिज में इण्डियन मजलिस के सेक्रेटरी रहे और उन्होंने अपने अनेकों भाषणों में भारत व उसकी स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में क्रान्तिकारी विचार व्यक्त किए। लन्दन में इन्होंने एक "Lotus and Dagger" (कमल व कृपाण) नाम की क्रान्तिकारी गुप्त संस्था बनाई जिसके प्रत्येक सदस्य को प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी कि वह भारत में अंग्रेज़ी शासन को उखाड़ फेंकने के लिए हर सम्भव प्रयत्न करेगा।

बड़ौदा राज्य-सेवा में रहते हुए भी वे अप्रत्यक्ष रूप से सक्रिय राजनीति में भाग लेते थे। 'इन्दु प्रकाश' नामक मासिक पत्रिका में उन्होंने अपने लेख प्रकाशित कर स्वतन्त्रता प्राप्ति के प्रति देशवासियों में जागरुकता उत्पन्न करने का प्रयत्न किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन में श्री अरविन्द लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के निकट सम्पर्क में आये और उनसे देश की विभिन्न समस्याओं पर विचार-विमर्श किया। यहीं पर श्री अरविन्द ने कांग्रेस का उद्देश्य-'पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति' रखने पर बल दिया। श्री विपिन चन्द्र पाल ने 'वन्दे मातरम्' नामक मासिक पत्रिका प्रकाशित की, जिसमें श्री अरविन्द ने पूर्ण सहयोग दिया।

अपनी विचारधारा का प्रचार एवं जन-जागृति उत्पन्न करने की दृष्टि से श्री अरविन्द ने 'नव शक्ति' नाम से एक बंगाली दैनिक पत्र प्रकाशित करने की योजना बनाई, परन्तु इनकी गतिविधियों पर दृष्टि रखने वाले गुप्तचर विभाग की रिपोर्ट पर इन्हें नवीन कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व ही गिरफ्तार कर अलीपुर जेल भेज दिया गया। अलीपुर जेल में वे लगभग एक वर्ष रहे। जेल में श्री अरविन्द ने वेद, गीता व उपनिषदों का अध्ययन किया एवं योग अभ्यास में समय बिताया। यहीं पर उनकी जीवन-धारा में एक महान् परिवर्तन आया। उसी समय से श्री अरविन्द ने राजनीतिक्षेत्र को पूर्णतः त्याग दिया और अध्यात्मिक एवं योगमय जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ कर दिया। एक महान् क्रान्तिकारी देशभक्त एवं परम योगी के रूप में उनका स्मरण सदा के लिए प्रेरणा एवं सबल प्रदान करता रहेगा। ■

दुनिया का दस्तूर

– प्रो. शामलाल कौशल

यह दुनिया
का दस्तूर है।
झुके वही
जो मजबूर है।
जितना पास
उतना दूर है।
वही हो जो
सबको मंजूर है।
जल्दी मिटे
जिसे गरूर है।

दिल ना जुड़े
जो चकना चूर हैं।
आलोचना ही पाये
जो मशहूर है।
हाथ ना आये जो
वही खट्टा अंगूर है।
कैसे टले जो
होना जरूर है।
छाया ना दे जो
वह ऊँचा खजूर है।

हे महाराजाधिराज परब्रह्मण। अखण्ड चक्रवृति राज्य के लिये शौर्य, धैर्य, नीति, विनय, प्राक्रम और बल आदि उत्तम गुणयुक्त कृपा से हम लोगों को यथावत पुष्ट करें। अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों।

(आर्याभिविनय-31 मन्त्र-ऋषि दयानन्द कृत)

www.thearyasamaj.org

('मूल की भूल' पुस्तक से साभार)

यह अद्यःपतन

- श्री राजेन्द्र जिज्ञासु

अवैदिक मतावलम्बी लोगों को यह अहसास कराया जाये कि मूल की भूल करके ईश्वर के तथाकथित दूतों-पूतों ने ईश्वर को कुछ से कुछ बना दिया। मनुष्य तो बिगड़ा ही, सारा संसार बिगड़ गया। बाईबल में आया है कि "God made man after His own image" अर्थात् प्रभु ने मनुष्य को अपने अनुरूप बनाया। बात सर्वथा इसके विपरीत है। मतवादियों ने ईश्वर को अपने अनुरूप घड़ा है। ईश्वर को एकदेशी बनाया है। किसी ने किसी आसमान की कल्पना करके उसे वहाँ बिठा दिया, किसी ने उससे भी ऊपर चढ़ा दिया। किसी ने किसी सागर में पहुँचा दिया तो किसी ने किसी पर्वत पर। किसी का भगवान् कैलाशवासी है तो किसी का क्षीर सागर में, किसी का तूर पर्वत पर आता है तो किसी का चौथे आसमान पर तो किसी का सातवें पर।

संसार में परमेश्वर को पाया जाये तो कैसे? ये पूजा के स्थल-ये मन्दिर-ये चर्च-ये मस्जिदें किसलिये? वह मिले कैसे? मतवादियों सोचो तो सही जब तुम्हारा इष्टदेव यहाँ रहता ही नहीं तो वह यहाँ मिलेगा कैसे? उसे पाओगे कैसे सब पूजा पाठ आपका बेकार है।

वह दिन कितना ऐतिहासिक है जब महर्षि दयानन्द ने वेद के लुप्त खजाने को सामने लाते हुए वेद की निम्न सूक्ति सत्यार्थप्रकाश में देकर अज्ञान-अंधेरे को दूर करके मानव को ईश्वर के स्वरूप का बोध कराया।

स ओतप्रोतश्च विभुः प्रजासु।

वह परमेश्वर प्राणियों में ओतप्रोत है। जो सर्वत्र है वही मिल सकता है। दूसरे की पूजा बेकार है। वही विश्व का नियन्ता हो सकता है। वह कण-कण में है। यदि ऋषि की बात मानकर हम अब भी भूल का निवारण कर दें तो विश्व का कितना कल्याण होगा।

ईश्वर का उपहास उड़ाने में लोगों ने क्या कमी छोड़ी है। पौराणिक मत के विधि-विधान से मूर्ति -पूजा की जाये तो पहले मूर्ति में प्राणप्रतिष्ठा करनी पड़ती है। इसके बिना मन्दिर में पूजा का प्रश्न ही नहीं। यह तो केवल जड़ पूजा के संस्कारों की बात है कि मूर्ति पूजक अब सिंदूर लगे प्रत्येक पत्थर के सामने शीश झुका देता है। विधि तो प्राण प्रतिष्ठा की है। कैसा घिनौना उपहास है ईश्वर से! विश्व के नियन्ता में मनुष्य प्राण फूँकने लगा। मैंने कश्मीर यात्रा में एक गीत लिखा था उसका एक पद है-

जड़ में भी चेतना का फूँका है प्राण तूने।
इन कूदते जलों में डाली है जान तूने।।
हिम आ रही गिरि से यह देखने नजारा....

मनुष्य अब उसमें प्राण-प्रतिष्ठा करता फिर रहा है। इससे स्पष्ट है कि मूर्ति पूजक समझता है कि जिसकी वह पूजा करने जा रहा है वह जड़ है, जड़ है और जड़ है। क्या करे बेचारा संस्कारों की कड़ियों में जकड़ गया। यह पाषाण पूजा छूटती नहीं।

मूर्तियाँ बना लीं। अब उनको भोग लगाने लगे। वस्त्र पहनाने नहलाने लगे। देखो! एक भूल से कहाँ जा गिरे। ऋषि के तर्क के तीरों से अज्ञान को दूर भगाया। जनता में कुछ चेतना आई। महाराष्ट्र के गाँधीवादी विद्वान श्री साने गुरु जी ने अपनी भारतीय संस्कृति विषयक पुस्तक में लिखा है कि मूर्तियों को भोग लगाना सब व्यर्थ व ढोंग है। अब तो पौराणिक जानते हुए भी मूर्ति-पूजा को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना चुका है। जब बेचारे ने उसमें प्राण-प्रतिष्ठा का आडम्बर किया तो उसकी प्रतिष्ठा का प्रश्न यह क्यों न बने?

मूर्तियों की रक्षा को समस्या का प्रश्न उत्पन्न हो गया। विदेशी आक्रमणकारी आये। मूर्तियाँ व स्त्रियाँ उनका पहला शिकार बनीं। स्त्रियों ने तो दुर्गावती बनकर तलवार कटार चलाई। सत्ती भी होती रहीं। मूर्तियाँ तो मक्खी की टाँग तक न तोड़ सकीं। क्या यही बल है इन मूर्तियों में।

ईश्वर जो सर्वरक्षक है पौराणिकों के लिए उसी की रक्षा का प्रश्न खड़ा हो गया। अब मन्दिर के भगवान् की रक्षा के लिए कड़े प्रबन्ध हैं। फिर भी आयेदिन मूर्तियाँ व मुकुट चोरी होते रहते हैं। देखा मूल की एक भूल ने कहाँ

www.thearyasamaj.org

लाकर उलझा दिया?

अब दम तोड़ रही मूर्ति-पूजा के लिए यह कहा जा रहा है कि मूर्ति भगवान तो नहीं परन्तु यह मन की एकाग्रता का साधन है। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने इस प्रश्न का बड़ा मार्मिक उत्तर दिया है जो 'साकार में स्थिर होता तो सब जगत का मन स्थिर हो जाता क्योंकि जगत में मनुष्य स्त्री, पुत्र, धन, मित्रादि साकार में फँसा रहता है परन्तु किसी का मन स्थिर नहीं होता जब तक निराकार में न लगावे।" ऋषि के इन शब्दों को हठ व दुराग्रह से मुक्त होकर यदि पौराणिक ग्रहण कर लेते तो विश्व से पाषाण पूजा का महापाप काफी कम हो जाता। परन्तु, लगता है कि मानव को अभी दुर्दिन देखने शेष हैं। इस महापाप का अन्त बहुत दिव्य आत्माओं का बलिदान माँगता है।

परन्तु स्मरण रखिये! अंधेरा धरा पर देर तक टिक न सकेगा। ऋषि के द्वारा प्रसारित उजाला विजयी होकर ही रहेगा।

■

हिन्दोस्ताँ हमारा

है वोस्ताँ हमारा हिन्दोस्ताँ हमारा,
है स्वर्ग से भी बढ़कर प्यारा वतन हमारा।
पहरे पे है हमारे इतना बड़ा समन्दर,
कोहे हिमालय भी है पासवाँ हमारा।
हस्रत से देखते हैं अहले बहिश्त इसको,
जन्नत निशाँ है बेशक हिन्दोस्ताँ हमारा।
लन्दन के ताजे शाही में कोहनूर देखो,
क्या पूछते हो हमसे नामो निशाँ हमारा
सुबको नहीं हमारी जो सबसे दब गये हैं,
फिर भी हर एक से पल्खा गिराँ हमारा।
जापानियों का जापान चीन चीनियों का,
हिन्दोस्ताँ के हम हैं, हिन्दोस्ताँ हमारा।
सर सब्जिये वतन की हमने हवाँ जो बाँधी,
क्या खाक कर सकेगी बादे खिजाँ हमारा।
नाला मिसाले बुलबुल हैं हालते वतन पर,
सोजा जिगर है गम से दिल है तपाँ हमारा।
थे दिन कभी कि हम भी रोतों को थे हँसाते,
थमता मगर नहीं अब अश्के रवाँ हमारा।
सर सब्ज यह जो होगा फूलें फलेंगे हम भी,
हम बागवाँ हैं इसके यह बोस्ताँ हमारा।
बाँगे जरस से जिसकी चौंके थे सुर्खरौ सब,
पीछे पड़ा हुआ है वह कारवाँ हमारा।
हम भी उठा के छोड़ेंगे सर पे आस्माँ को,
सर पे जमीं उठायें लाख आस्माँ हमारा।
बहरे अदन गुहर को बुलबुल को बाग फर्रुख
हमको "फसक" मुबारक हिन्दोस्ताँ हमारा।।

वोस्ताँ-बाग; कोहे-पर्वत; पासवाँ-द्वारपाल, रक्षक; हस्रत- लालसा; अहले- निवासी; बहिश्त- स्वर्ग; लघुता- लघुता; पल्ला- तराजू का पलड़ा; गिराँ- भारी; सब्जिये-हराभरा, समृद्ध; बादे- वायु; खिजाँ- पतझड़ ऋतु; नाला- रोता चिल्लाता हुआ; मिसाले- समान; सोजा- जलता हुआ; तपाँ- तड़फता हुआ; अश्के-आँसू; रवाँ-बहता हुआ; बाँगे-ध्वनि; जरस-घंटा, घड़ियाल; सुर्खरौ-सफलता मण्डित लोग, बहरे-सागर; अदन-स्थान विशेष का नाम; गुहर-मोती; फर्रूख-कल्याणकारी; मुबारक-मंगलमय।

('मन की लहरें' पुस्तक से साभार)

Auth. Distributor
Sleepwell
Sleepwell

परदे ही परदे गददे ही गददे

Singhal Furnishing

J.K. Singhal
S.K. Singhal

(Auth. Sleepwell Gallery)

Deals in : All kinds of S/W Mattress, Cushions, Pillows, Flooring Carpets, Curtains, Sofa's Clothes, Sofa Materials & Blinds.

Near Aggarwal Dharmshala, Nathu Colony, Chawla Colony, Ballabgarh-121004

Ph. : (O) 0129-2244905 J.K. : 9911706903 S K 9891305902

www.thearyasamaj.org

('गोदी भरे लाल' पुस्तक से साभार)

विचित्र बालक

– मुरारी लाल शर्मा

दीन हीन दुखियों को सुख दे, प्रेम–अश्रु बरसाऊँ मैं।
विश्वम्भर सर्वदा विश्व के, सदुपयोग में आऊँ मैं।।
–एक राष्ट्रीय आत्मा

बंगाल प्रान्त की राजधानी कलकत्ता नगर से 75 मील की दूरी पर पतितापावनी गंगा माता के तट के नदिया नामक स्थान में जगन्नाथ मिश्र राम के एक परम विद्वान्, परन्तु निर्धन ब्राह्मण रहते थे। इन्हीं की धर्मपत्नी श्रीमती शचीदेवी की गोद में हमारे चरित्रनायक ने सन् 1485 ई. में जन्म लिया।

बालक का नाम विश्वम्भर रखा गया, परन्तु शचीदेवी गाँव की स्त्रियों के परामर्शानुसार अपने पुत्र को तुच्छ नाम 'निमाई' से पुकारती थी। कारण, शची के कई बालक मर चुके थे और वह किसी–न–किसी प्रकार विश्वम्भर को जीवित देखना चाहती थी। निमाई बड़ा ही सुन्दर हँसमुख और गौरा बालक था। इसी कारण अड़ोस–पड़ोस के लोग उसे 'गौरांग' के नाम से पुकारते थे।

निमाई का जन्म फाल्गुण की पूर्णमासी को सायंकाल के समय हुआ था। इस समय चन्द्रग्रहण होने के कारण लोग मुख से 'हरी–हरी' कह रहे तथा शंख–झाँझ आदि बाजे बजा रहे थे। इसी से लोगों ने अनुमान किया कि यह बालक बड़ा ही होनहार होगा, और लोगों का यह अनुमान आगे चलकर ठीक ही निकला।

निमाई बचपन ही से हट्टा–कट्टा, साफ–सुथरा और सुन्दर प्रतीत होता था, परन्तु साथ ही साथ सारे नगर में इससे अधिक नटखट और कोई बालक न था। उसने बचपन से ही अड़ोस–पड़ोस के बालकों का दल बना लिया। इस दल को लेकरनिमाई कभी पेड़ों के सब फल तोड़ डालता तो कभी मुहल्ले या आस–पास के निर्दोष बालकों को पीट देता। इसका दल कभी–कभी रात हो जाने पर भी बहुत देर तक गंगा में तैरता रहता और कभी दिन में दोपहर की कड़ी गर्मी में गंगा के तट के रेतीले मैदान में कबड्डी का खेल मचाता। और कुछ न मिलता तो गंगा में स्नान करने जानेवालों की पूजा की मूर्तियाँ, शिवलिंग, ठाकुर जी और बेल पत्र धूप दीप आदि पूजा की सामग्री नदी में फेंक देता और फलों को उठाकर साथियों में बाँट देता। इतना ही नहीं, उनके कपड़े उठाकर भाग जाता, किसी की टाँग पकड़कर गहरे पानी में खींच ले भागता। पूजा करनेवालों के कानों में जोर से चिल्लाता और उनके कंधों पर हाथ रखकर उनके ऊपर को कूदने तथा उन पर कीचड़ और रेत की बौछार करने से भी न चूकता।

सारांश यह कि दंगा करने में निमाईनटखट और चंचल यशोदानंदन माखनचोर कृष्ण से भी बढ़ा–चढ़ा रहा।

कुछ बड़ा होने पर पंडित जगन्नाथ मिश्र ने निमाई को पढ़ने के लिए पाठशाला भेजा। पाठशाला में जाकर भी निमाई का दंगा करना न छूटा। शिक्षक हैरान था कि इस दंगई लड़के को किस प्रकार ठीक मार्ग पर लाया जाए? परन्तु उन्हीं दिनों एक घटना ने निमाई के जीवन में एक विशेष परिवर्तन कर दिया। घटना इस प्रकार हुई–

एक अंधेरी रात को जब सब लोग सो रहे थे, निमाई का 16 वर्ष की अवस्था का बड़ा भाई विश्वरूप संन्यासी होने के लिए घरबार छोड़ भाग निकला। माता–पिता और परिवार के लोगों ने रो–रोकर घर सिर पर उठा लिया। निमाई ने इस अवसर पर उन्हें बहुत–कुछ सान्त्वना दी, परंतु उन्हें किसी भाँति भी संतोष न हुआ।

इस घटना के थोड़े ही दिन पश्चात्, एक दिन निमाई अचानक मूर्च्छित हो गया। सुध लौटने पर वह बोला, "मेरा भाई विश्वरूप मेरे पास आया था। वह कहता था कि तुम भी संन्यासी हो जाओ। परन्तु मैंने उत्तर दिया, मेरे माता–पिता बुढ्डे हैं। दूसरे, मैं अभी बालक हूँ, अतः मैं अभी संन्यासी नहीं हो सकता। मैं घर पर रहकर ही सब प्रकार से अपने माता–पिता की सेवा करूँगा।"

पाठशाला में भी निमाई ने कमाल कर दिखाया। उसकी टक्कर का अन्य कोई विद्यार्थी न रहा। उसकी असाधारण योग्यता और प्रखरबुद्धि का क्या शिक्षक और क्या विद्यार्थी, सभी पर सिक्का था। उसने अल्पकाल में ही व्याकरण, तर्कशास्त्र तथा साहित्य के बहुत–से ग्रंथ कंठाग्र कर डाले।

www.thearyasamaj.org

पुत्र की इस असाधारण योग्यता को देखकर पिता का हृदय काँप उठा। कारण, पिता का दृढ़ विचार था कि अधिक विद्या पढ़ने से मनुष्य संसार को असार समझकर संन्यासी हो जाता है। पिता को इस विषय में अपने बड़े पुत्र विश्वरूप का बड़ा ही मर्मवेधी अनुभव था। इसीलिए शचीदेवी के बहुत मना करने पर भी पंडित जगन्नाथ मिश्र ने निमाई को पाठशाला से उठा लिया और नदिया के एक बहुत ही साधारण पंडित वल्लभाचार्य की पुत्री लक्ष्मी से उसका विवाह कर दिया।

अब तो निमाई अपनी एक पाठशाला स्थापित करके बालकों को पढ़ाने लगा। थोड़े दिन बाद लक्ष्मी को साँप ने काट खाया जिससे वह मर गई। इसके बाद एक बार निमाई गया की तीर्थ-यात्रा करने गए। वहाँ उनकी ईश्वरपुरी नाम के एक पहुँचे हुए महात्मा से भेंट हुई। महात्मा जी के उपदेश का निमाई पर ऐसा गहरा प्रभाव पड़ा कि निमाई का सब अज्ञान दूर हो गया। उसी दिन से उसने अपना नाम चैतन्य रख लिया। चैतन्य देश के कोने-कोने में कृष्ण-भक्ति का प्रचार करने लगे। उनके उपदेश से जगाई और मधाई, दो बड़े डाकू तक उनके शिष्य हो गए।

चैतन्य की कृष्ण-भक्ति अपूर्व थी। दीन-हीन लोगों के प्रति उनका प्रेम अपार था। कृष्ण की भक्ति में वे कभी हँसने लगते, कभी रोने, कभी पेड़ों पर 'कृष्ण-कृष्ण' कहते चढ़ जाते और कभी 'कृष्ण-कृष्ण' चिल्लाते बेसुध हो जाते। जहाँ कहीं दीन-दुःखियों, अंधे-अपाहितों, लँगड़े-लूलों तथा कोढ़ियों को देखते, उनको हृदय से लगा लेते और बड़े प्रेम से उनकी सेवा करने लगते।

अन्त में सन् 1533 ई. में जगन्नाथपुरी में इस महात्मा का देहान्त हो गया। भक्तों ने चारों दिशाएँ 'हरी-हरी' शब्द से गुंजित कर दीं। आज भी इनके शिष्य वृन्दावन, जगन्नाथपुरी तथा बनारस आदि तीर्थ-स्थानों में इनके चलाए हुए धर्म का प्रचार करते हैं।

विचित्र बालक निमाई का जीवन कैसी अपूर्व, अलौकिक तथा चमत्कारी घटनाओं का मेल है। संसार में ऐसे विचित्र बालक बहुत ही कम जन्म लेते हैं। ■

Arya Public School

Near 100 Ft. Road, Sec.-55, Jeevan Nagar, Faridabad

The School : Neat & Clean Campus, Educated and dedicated Promotors, Transport Facility from nearby areas, Permanently recognised and affliated to Haryana Board, Special emphasis on Spoken English, Ultra modern teaching aids, including projectors, Library with all relevant material.

Director
Sanjay Arya
9212307856

Principal
Rajni Arya
9212307852

www.thearyasamaj.org

आओ संगठित होकर आगे बढ़ें

– चाँद सिंह आर्य (चन्द्रदेव), गुरुकुल झज्जर

किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति या अभाव की पूर्ति अथवा अन्याय का प्रतिरोध करने के लिए ही संगठन का निर्माण किया जाता है। इस कार्य के लिए सर्वहितकारी नियम बनाकर सबको मिलकर कार्य करने की आवश्यकता होती है। संगठन, संस्था या संस्थान में संवाद, सम्पर्क एवं सहयोग से विकेन्द्रित शक्ति को एकीकृत करके विस्तार करना होता है। संगठन की वृद्धि में, नेतृत्व कार्यकर्ता एवं प्रचारक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इनका ज्ञान जितना परिष्कृत होगा, उतना ही संवाद, वाणी, निर्णय, सेवा और व्यवहार उन्नत होगा। यही संगठन को आगे बढ़ाते हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति को वाणी और व्यवहार की भूलों से बचना चाहिए। इनकी भूलों से समय, सम्बन्ध, संस्कार, शक्ति एवं संगठन की अत्यधिक हानि होती है। हम किसी का सो बार सम्मान करे, प्रशंसा करें तो भी वह याद नहीं रखता लेकिन एक बार किया गया अपमान जिन्दगी भर नहीं भूलता। शारीरिक चोटों का घाव तो भर जाता है लेकिन वाणी का घाव नहीं भरता क्योंकि यह सीधा दिल पर चोट करती है। अतः वाणी के चार दोषों से बचकर सत्य, मधुर, हितकर एवं सार्थक बोलें।

व्यवहार एवं स्वभाव एक ऐसी चीज है जिसकी वजह से इन्सान या तो दिल में उतर जाता है या दिल से उतर जाता है। अधिक बोलना भी कई बार हानिकारक सिद्ध होता है। कई महानुभाव समझते कम और समझाते हैं ज्यादा इसलिए सुलझाते हैं कम और उलझाते हैं ज्यादा। जिससे नुकसान ज्यादा होता है। बहुत से कार्य खराब ढंग से करने की बजाए थोड़े कार्य अच्छे ढंग से करने में अधिक लाभ होता है। व्यक्ति कार्य की अधिकता से नहीं, कार्य की अव्यवस्था से थकता है। अतः प्रत्येक कार्य को ज्ञानपूर्वक, विवेकपूर्व संस्था या संस्थान खड़ा तो होता है भावना, उत्साह एवं संकल्प से लेकिन चलता है सिस्टम समझ व्यवस्था एवं निरन्तरता से सही दिशा में 100 प्रतिशत इमानदारी के साथ पुरुषार्थ करने से।

क्रियाशील कार्यकर्ता के कार्य में भूल या त्रुटि भी हो जाया करती है। ऐसे अवसर पर दुर्जन उपहास करते हैं लेकिन सज्जन व्यक्ति जो संगठन, संस्था, समाज के हितेषी होते हैं वो सही मार्गदर्शन करके उत्साह बढ़ाते हैं, प्रोत्साहित करते हैं।

जो गलती कर नहीं सकता उसे भगवान कहते हैं। जो गलती करके सम्भल जाये उसे इन्सान कहते हैं। जो गलती पर करे गलती उसे शैतान कहते हैं और जो गलती को न माने उसे हैवान कहते हैं। कहा भी गया है–बन न सके भगवान अगर हम कम से कम इन्सान बनें, नहीं कभी शैतान बनें हम, नहीं कभी हैवान बनें। बहुत से व्यक्ति बड़ी गलती करके भी महान बने हैं जिनमें दलिताउद्धारक भक्त फूल सिंह, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, आर्य वीर राम प्रसाद बिस्मिल एवं कवि अमीचन्द आदि नाम विश्वविख्यात हैं। इंसान को ठोकरें भी सीखाती हैं, सन्मार्ग दिखाती हैं।

दो प्रकार के व्यक्ति असफल होते हैं–एक तो वो जो करते हैं सोचते नहीं। दूसरे वो जो सोचते हैं करते नहीं लेकिन सफल वो होते हैं जो कार्य करने से पहले हर पहलू पर हर दृष्टिकोण से हजार बार सोचते हैं, विचार करते हैं लेकिन कार्य पूर्ण हुए बिना बीच में नहीं छोड़ते हैं चाहे हजार हजार मुसिबत आएं। हमें हर जगह पूर्णता की भी इच्छा नहीं करनी चाहिए। हर व्यक्ति हर कार्य में पूर्ण नहीं होता, जैसा पात्र हो उससे उसी प्रकार का उपयोग लेना चाहिए। हाथी का पिलाण गधे पर रखेंगे तो हंसी का पात्र ही बनेंगे। अतः योग्यता अनुसार जिम्मेदारी देना व लेना बुद्धिमानी है, समझदारी है तथा संगठन हितकारी है।

जब नेतृत्व, प्रचारक, कार्यकर्ता, शिक्षक, समाजसुधारक दौड़ता है तो आम व्यक्ति चलता है और नेतृत्व... चलने लगे तो आम व्यक्ति बैठ जाता है और नेतृत्व बैठ जाए जाए तो आम व्यक्ति सो जाता है और नेतृत्व सो जाए तो आम व्यक्ति का क्या होगा? अतः आओ हम सब मिलकर सही दिशा में 100 प्रतिशत ईमानदारी के साथ निरन्तरता से स्वार्थ रहित होकर ऋषिऋण को कम करने के लिए दौड़े। इसी उद्देश्य को लेकर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाना, आर्य वीर दल हरियाणा एवं महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर एवं आप सभी के सहयोग से अनेकों कार्य किये गए हैं। ■

www.thearyasamaj.org

उपनिषद स्वाध्याय सार

प्रस्तुति – शिवसिंह (सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक)

सृष्टि : सृष्टि उसे कहते हैं जो पृथक द्रव्यों का ज्ञानयुक्ति पुर्वक मेल होकर नाना रूप बनना।

सृष्टि का प्रयोजन : यही है कि जिसमें ईश्वर के सृष्टि निमित्ता गुण, कर्म, स्वभाव का साफल्य होना। सृष्टि सकर्तक है। इस जगती में जो जगत है वह ईश द्वारा बसा हुआ है क्योंकि सृष्टि की रचना देखने और जड़ पदार्थ में अपने आप यथा योग्य बीजादि स्वरूप बनने का सामर्थ्य न होने से सृष्टि का कर्ता अवश्य है और वह है एक शक्ति। जिसे हम सब प्राणी ईश, प्रभु, भगवान, खुदा आदि नाम से जानते हैं। इस जगती का अर्थ है गति वाली और जगत का अर्थ है गतिमान्। इस संसार का सब कुछ गतिमान है, सूर्य, पृथ्वी, चन्द्र, तारे में गति है। इनके एक-एक कण में गति है। तो क्या ये गति यू ही हो रही है? नहीं। इस गति का देनेवाला है। कोई ईशशक्ति या स्वामी। इस संसार में जो कुछ विद्यमान है वह सब उसी का है। वह प्रत्येक सजीव वस्तु में विराजमान है, यह समझकर कि सब कुछ उसी का है तो हम हाथ पर हाथ रख कर न बैठें, क्योंकि उस प्रभु ने हम सब जीवों को कर्म करने के लिए इस संसार में पैदा किया है। परन्तु कर्म करना जीव के ऊपर निर्भर है कि वह जैसा कर्म करेगा वैसा ही फल पायेगा। फल ईश्वर के हाथ में है।

ईश्वर का सर्वोत्तम नाम (ओ३म्) है, क्योंकि इसमें जो अ, ३ और म ये तीन अक्षर मिलकर एक 'ओ३म्' समुदाय हुआ है। इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं जैसे अकार से विराट्, अगिन और विश्व। उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तेजस। मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञ। वह परमात्मा कंपन तक नहीं करता परन्तु मन से भी अधिक वेगवान है। इन्द्रियाँ उसे प्राप्त नहीं कर सकती। परन्तु वह इन्द्रियों से भी पूर्व विद्यमान है। वह ठहरा हुआ भी दौड़ते हुओं को पीछे छोड़ देता है, उसी के कारण वायु जो स्वयं हल्की है परन्तु अपने से भारी जल को उठा लेती है। वह चलता है; वह नहीं चलता। वह दूर है और निकट भी है। वह इस सबके अन्तर में है, वही इस सबके बाहर से वर्तमान है। वह हर वस्तु को गहराई से देखता है। वह प्रत्येक वस्तु की ओर से झांकता रहता है। अतः जिस जानने वाले के ज्ञान में सब भूत आत्मवत् हो गये फिर वहाँ मोह और शोक कैसा? भौतिक जगत् एक होकर प्रकृति में और प्रकृति अपने निमित्त कारण आत्मा में लीन हो जाती है। जो द्रष्टा सब भूतों को इस प्रकार आत्मा में मिटते हुए देख लेता है वह फिर न मोहावस्था में जाता है, न शोकावस्था में। संसार में फंसकर दो ही अवस्थाओं में जीव धंस सकता है। विषय-सुख मिलने पर मोहावस्था में फंसा रहता है। विषय सुख छूट जाने पर शोकावस्था में सिर धुनने लगता है। अगर संसार में न फंसे, आत्मभाव से बना रहे तो संसार में कर्म करता हुआ भी फंसता नहीं। पंच भूतों में लिप्त हो जाने वाली अनात्मदृष्टि से मोह और शोक होते हैं। निर्लप्पता औरी नष्कामता की आत्मदृष्टि से ये दोनों छूट जाते हैं।

वह शाश्वत काल से जो सृष्टि चल रही है। लगातार सृष्टि का प्रवाह चलता जा रहा है, उसके लिए ठीक ठीक पदार्थों की व्यवस्था जिस समय जो कुछ होना चाहिए यह सारा प्रबन्ध वही कर रहा है। जो अविद्या (भौतिकवाद) की उपासना करते हैं वे गहरे अन्धकार में जा पहुँचते हैं और जो विद्या (आध्यात्मकवाद) में रत रहने लगते हैं, भौतिक जगत की परवाह नहीं करते वे उससे भी गहरे अन्धकार में जा पहुँचते हैं। विद्या से अन्य ही कुछ फल होता है; जो इन दोनों को जानते हैं वे भौतिक विज्ञान से मृत्यु लाने वाले प्रवाहों से तर जाते हैं। और अध्यात्मज्ञान से अमृत चखते हैं।

हे प्रजाओं के पति! आपकी रश्मियों का व्यूह चारों तरफ फैल रहा है; उन्हीं रश्मियों के कारण प्रकृति के नाना रूप प्रकाशमान हो रहे हैं। मैं ब्रह्म को भूल कर प्रकृति को सब कुछ समझ बैठा हूँ। मैं आत्मबल को भूल कर शरीर को सब कुछ समझ बैठा हूँ। ब्रह्माण्ड में जो कुछ है वही पिंड में है और पिंड में है वही ब्रह्माण्ड में है। ■

जब आर्यों का राज्य था तब यहाँ उपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे, तब आर्यवर्त और अन्य देशों में मनुष्यादि प्राणी बड़े आनन्द से रहते थे। जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आकर गौ आदि पशुओं को मारने वाले मद्यपायी अधिकारी हुए हैं तब से क्रमशः आर्यों के दुःख की वृद्धि होती जा रही है। (सत्यार्थप्रकाश – ऋषि दयानन्द कृत)

www.thearyasamaj.org

विजय (मासिक) 25 अक्टूबर, 2013
HR/FBD/67/2013-2015 dt. 1.1.13
Reg. No. : 42323/84

सेवायाम्
श्रीमान्/श्रीमती

आर्य समाज, सैक्टर 7,
फरीदाबाद-121 006

उजली व चमकदार धुलाई
हाथ सुरक्षित
वनस्पति अखाद्य तेलों से निर्मित

निर्माता : **पुनीत उद्योग**
37-E, सैक्टर 6, फरीदाबाद-121006
दूरभाष : 0129-2241467, 4061389

ट्रेड मार्क मालिक :-
उत्तम कैमीकल उद्योग
प्लाट नं. 309, सैक्टर-24, फरीदाबाद पिन - 121006

आर्य वीर विजय, मनोहर लाल द्वारा आर्य वीर दल हरियाणा के लिए 'तप मिनी ऑफसैट प्रिंटर्स', 279 सेक्टर 7 मार्किट, फरीदाबाद से छपवाकर, आर्यसमाज मन्दिर, सैक्टर 7, फरीदाबाद-121006 से प्रेषित।